शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 92-95

विवेकी राय के कथा-साहित्य में ग्राम्य जीवन का यथार्थ और बदलता सामाजिक परिदृश्य

शोधार्थी: मदन मोहन सिंह
हिन्दी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (मध्य-प्रदेश)
शोध निर्देशक: डॉ. मंगल सिंह अहिरवार
सहायक प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय जयसिंह नगर, जिला – शहडोल (म.प्र.)

Received– 27June - 2026
Accepted-29 June- 2026
Published– 30 June 2026
Corresponding Author-
मदन मोहन सिंह
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (मध्य-प्रदेश)
DOI-https://doi.org/10.67275/SU.2026.041424

Funding Policy-
'Shodh Utkarsh' is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.
वित्त पोषण नीति-
'शोध उत्कर्ष' एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।
Copyright Notice -
© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).
कॉपीराइट सूचना-
© २०२६ लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।

OPEN ACCESS
Shodh Utkarsh
CC-BY 4.0

सारांश- हिंदी कथा-साहित्य में ग्रामीण जीवन के यथार्थ, उसकी अंतःकथाओं और बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को जिस प्रामाणिकता, गहराई और संवेदनशीलता के साथ विवेकी राय ने चित्रित किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। उनका संपूर्ण कथा-संसार—उपन्यासों और कहानियों—भारतीय ग्राम्य-संस्कृति की धड़कनों, उसके पारंपरिक मूल्यों के विघटन, आधुनिकता के प्रभाव, वर्ग-संघर्ष, जातिगत विसंगतियों और कृषक जीवन के गहरे संकटों का जीवंत दस्तावेज है। उन्होंने गाँव को न तो केवल आदर्श का स्थान बनाया और न ही उसे केवल समस्याओं का अड्डा दिखाया; बल्कि दोनों पक्षों को बड़ी ईमानदारी और संतुलन के साथ उकेरा है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में विवेकी राय के कथा-साहित्य के विशेष संदर्भ में ग्राम्य जीवन के यथार्थ स्वरूप तथा कालान्तर में बदलते हुए सामाजिक परिदृश्य का गहन और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। उनके प्रमुख उपन्यासों जैसे 'बबूल', 'सोमाय की वापसी', 'पुरुष पुराण', 'मंगल भवन' और 'लोकरिन' के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि कैसे एक समय में स्वावलंबी, सामूहिक भावना से ओत-प्रोत और अपनी मिट्टी से गहराई से जुड़े रहने वाला ग्रामीण समाज उत्तर-स्वतंत्रता काल में राजनीतिक स्वार्थों, आर्थिक शोषण, पलायन, बाजारवाद और वैश्वीकरण के दबावों के कारण तेजी से रूपांतरित हो रहा है। भूमि-सुधारों की अधूरी प्रक्रिया, महाजनी संस्कृति का प्रसार, दलीय राजनीति का प्रवेश और शहरी आकर्षण ने गाँव की पारंपरिक संरचना को गहरी चोट पहुँचाई है।

विवेकी राय ने इस बदलाव को केवल एक बाह्य संकट या सतही परिवर्तन के रूप में नहीं देखा। उन्होंने ग्रामीण मनुष्य के अंतस में मची उथल-पुथल, उसकी मानसिक द्वंद्व, मूल्य-संकट और पहचान की खोज को भी शिद्दत से रेखांकित किया है। उनके पात्र न तो पूरी तरह आदर्शवादी हैं और न ही निराशावादी; वे वास्तविक मनुष्य हैं जो परंपरा और आधुनिकता, सामूहिकता और वैयक्तिकता, श्रम की गरिमा और आर्थिक विवशता के बीच झूलते हुए दिखाई देते हैं।

यह अध्ययन न केवल विवेकी राय के साहित्यिक योगदान को समझने में सहायक है, बल्कि आज के वैश्वीकृत और शहरीकृत युग में ग्रामीण भारत की जटिल वास्तविकताओं को भी बेहतर ढंग से समझने का मार्ग प्रशस्त करता है। उनका कथा-साहित्य हमें याद दिलाता है कि विकास की अंधी दौड़ में हम अपनी जड़ों से कितनी दूर आ चुके हैं और उन जड़ों से जुड़े रहना कितना आवश्यक है।

बीज शब्द: विवेकी राय, कथा-साहित्य, ग्राम्य जीवन, सामाजिक परिदृश्य, यथार्थ, कृषक संकट, वर्ग-संघर्ष, आधुनिकीकरण, परंपरा और आधुनिकता।

1. प्रस्तावना- भारतीय समाज की आत्मा उसके गाँवों में बसती है—यह कथन जितना दार्शनिक दृष्टि से सत्य है, उतना ही साहित्यिक और यथार्थवादी धरातल पर भी महत्वपूर्ण रहा है। हिंदी कथा-साहित्य में ग्रामीण जीवन के यथार्थ को उकेरने की एक लंबी और समृद्ध परंपरा रही है, जिसमें प्रेमचंद से लेकर फणीश्वरनाथ रेणु और नागार्जुन तक के नाम प्रमुखता से लिए जाते हैं। प्रेमचंद ने गाँव को सामाजिक न्याय और किसान-संघर्ष के केंद्र में रखा, रेणु ने आंचलिकता और लोक-संस्कृति को जीवंत किया, तो नागार्जुन ने राजनीतिक चेतना और वर्ग-संघर्ष को अपनी रचनाओं में प्रमुखता दी। इसी परंपरा को अत्यंत समृद्ध, जीवंत और बहुआयामी बनाने वाले हस्ताक्षर के रूप में विवेकी राय का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

विवेकी राय ने अपने कथा-साहित्य में केवल गाँवों की बाहरी सुंदरता, हरियाली या लोक-संस्कृति के उत्सवधर्मी रूपों का ही चित्रण नहीं किया। उन्होंने गाँवों के भीतर सुलगती आग, अर्थतंत्र की विसंगतियों, जातिगत विषमताओं, सामाजिक विखंडन और आधुनिकता के पाँव पसारने से उत्पन्न होने वाले गहरे सामाजिक परिवर्तनों को अपनी पैनी और संवेदनशील दृष्टि से परखा है। उनके यहाँ

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 92-95

गाँव न तो केवल आदर्श का स्थान है और न ही केवल समस्याओं का अड्डा। वह दोनों का जीवंत मिश्रण है—जहाँ एक ओर भाईचारा, श्रम की गरिमा और सामूहिक जीवन के अवशेष मौजूद हैं, वहीं दूसरी ओर शोषण, पलायन, राजनीतिक स्वार्थ और मूल्य-संकट की पीड़ा भी उतनी ही प्रबल है।

विवेकी राय का संपूर्ण रचना-कर्म गाजीपुर और बलिया की माटी से गहराई से जुड़ा हुआ है। गंगा और घाघरा के दोआब की भौगोलिक विशिष्टता, वहाँ की बाढ़ और सूखे की मार, खेतों की गंध और जनजीवन का कड़वा सच—सब कुछ उनकी रचनाओं में प्रामाणिकता के साथ उपस्थित है। वे स्वयं उस मिट्टी से जुड़े रहे, गाजीपुर के कॉलेज में अध्यापन करते हुए भी अपनी जड़ों से कभी नहीं कटे। यही वजह है कि उनका अनुभव किताबी या सैद्धांतिक नहीं, बल्कि अनुभूत और जीवन से उपजा हुआ है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के गाँवों में जिस प्रकार की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं, भूमि-सुधारों के अधूरेपन, महाजनी सभ्यता, ठेकेदारी प्रथा और शहरी संस्कृति के आक्रमण ने प्रवेश किया, उसका सबसे सजीव और मार्मिक अंकन विवेकी राय के उपन्यासों और कहानियों में मिलता है। पारंपरिक ग्रामीण समाज जो सदियों से अपनी आंतरिक लय और सामूहिक भावना के साथ जी रहा था, अचानक बाजारवाद, दलीय राजनीति और पलायन के दबाव में रूपांतरित होने लगा। इस संक्रमण को उन्होंने केवल बाह्य परिवर्तन के रूप में नहीं देखा, बल्कि ग्रामीण मनुष्य के अंतस में मची उथल-पुथल, उसकी पहचान की खोज और मूल्य-संकट को भी शिद्दत से रेखांकित किया।

प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य विवेकी राय के कथा-साहित्य के आलोक में ग्राम्य जीवन के यथार्थ और उस समाज में आए तीव्र तथा जटिल परिवर्तनों (बदलते सामाजिक परिदृश्य) का गहन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। यह अध्ययन न केवल उनके साहित्यिक योगदान को समझने में सहायक होगा, बल्कि आज के वैश्वीकृत और तेजी से बदलते ग्रामीण भारत की वास्तविकताओं को भी बेहतर ढंग से समझने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

2. विवेकी राय के कथा-साहित्य में ग्राम्य जीवन का यथार्थ: पारंपरिक संरचना और आंतरिक संकट-विवेकी राय के कथा-साहित्य में ग्रामीण जीवन का यथार्थ अत्यंत बहुआयामी और जटिल है। एक तरफ जहाँ गाँव अपने भाईचारे, सामूहिक उत्सवों, श्रम की प्रतिष्ठा और प्रकृति के साथ सहज साहचर्य के लिए जाने जाते हैं, वहीं दूसरी तरफ वे गहरी आंतरिक फूट, जातिगत अहंकार, अंधविश्वास, आर्थिक शोषण और मानवीय संबंधों के टूटने के अखाड़े भी हैं। लेखक ने इन दोनों पक्षों को बड़ी ईमानदारी, संवेदनशीलता और संतुलन के साथ उकेरा है। उनके यहाँ गाँव न तो केवल आदर्श का स्थान है और न ही केवल समस्याओं का अड्डा; वह दोनों का जीवंत और प्रामाणिक मिश्रण है। यही द्वंद्व उनके कथा-साहित्य को गहराई और विश्वसनीयता प्रदान करता है।

क) कृषि-संस्कृति और श्रम का यथार्थ-विवेकी राय के उपन्यासों में खेती केवल व्यवसाय या आजीविका का साधन नहीं है, बल्कि वह ग्रामीण जीवन का धर्म, दर्शन और जीवन-पद्धति है। खेतों में हल चलाना, पसीना बहाना, फसल की देखभाल करना और प्रकृति के साथ तालमेल बिठाना—ये सब उनके पात्रों के लिए अस्तित्व का आधार हैं। 'बबूल' और 'सोमाय की वापसी' जैसी कृतियों में किसान और मजदूर के श्रम की जो प्रतिष्ठा दिखाई गई है, वह अद्भुत और मार्मिक है। लेखक ने श्रम की गरिमा को बहुत ऊँचा स्थान दिया है। मेहनतकश व्यक्ति की थकान, उसकी उम्मीदें और उसकी चुपचाप चलती जिंदगी को उन्होंने बड़ी संवेदनशीलता से चित्रित किया है। किंतु इसी कृषि-संस्कृति के केंद्र में एक गहरा और स्थायी संकट भी निहित है। सूखा, बाढ़, लगान, महाजनों का कर्ज, फसल का उचित मूल्य न मिलना और बाजार की अनिश्चितता—ये सब मिलकर किसान और मजदूर के जीवन को कठिन बना देते हैं। विवेकी राय ने बहुत ही यथार्थवादी ढंग से दिखाया है कि कैसे प्रकृति की मार और सामाजिक ताने-बाने की विसंगतियाँ मिलकर मेहनतकश इंसान को तोड़ देती हैं। 'बबूल' में किसान की उस विवशता को देखा जा सकता है जहाँ वह अपनी जमीन बचाने के लिए महाजन के चंगुल में फँस जाता है और धीरे-धीरे अपनी स्वाधीनता खो बैठता है। 'सोमाय की वापसी' में पलायन के बाद लौटे व्यक्ति की निराशा, गाँव की बदली हुई आर्थिक स्थिति और श्रम की गरिमा के क्षरण को मार्मिकता से उकेरा गया है।

लेखक ने यह भी दिखाया है कि कृषि-संस्कृति केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और भावनात्मक आधार भी है। जब यह आधार कमजोर पड़ता है तो पूरा सामाजिक ताना-बाना प्रभावित होता है। श्रम की प्रतिष्ठा के बावजूद किसान और मजदूर दोनों ही शोषण के चक्र में फँसे हुए हैं। यह यथार्थ विवेकी राय के साहित्य की सबसे बड़ी ताकत है—वे न तो श्रम को रोमांटिक बनाते हैं और न ही संकट को केवल आँकड़ों में बदलते हैं। वे मनुष्य की पीड़ा को महसूस कराते हैं।

ख) जातिगत विषमता और वर्गीय विखंडन-भारतीय ग्रामीण समाज की सबसे बड़ी विडंबना उसकी जातिगत संरचना और पदानुक्रम है। विवेकी राय ने अपनी रचनाओं में सवर्ण प्रभुत्व, दलितों और पिछड़ों की उपेक्षा तथा सामाजिक न्याय के अभाव को बिना किसी लाग-लपेट के चित्रित किया है। गाँव के भीतर चलने वाला यह अंतर्संघर्ष केवल राजनीतिक या आर्थिक नहीं है, बल्कि यह मनुष्यता और मानवीय गरिमा का गहरा संघर्ष है। जाति की दीवारें व्यक्तिगत संबंधों, विवाह, संपत्ति, सम्मान और यहाँ तक कि रोजमर्रा के व्यवहार को भी प्रभावित करती हैं।

'पुरुष पुराण' और 'लोकरिन' जैसी कृतियों में इन वर्गीय और जातिगत दरारों को बहुत बारीकी और गहराई से उकेरा गया है। सवर्ण वर्ग की अहंकारी मानसिकता, दलित समुदाय की चुप्पी और बीच के वर्ग की दुविधा—सब कुछ उनके कथा-पात्रों के माध्यम से जीवंत हो उठता है। लेखक ने दिखाया है कि जातिगत विषमता केवल ऊपरी स्तर पर नहीं, बल्कि मनुष्य के अंतस में भी गहरी जड़ें जमाए हुए है। सामाजिक न्याय की माँग और पुरानी व्यवस्था की जकड़न के बीच का द्वंद्व उनके साहित्य में बार-बार आता है। विवेकी राय का दृष्टिकोण आलोचनात्मक होने के साथ-साथ संवेदनशील भी है। वे पीड़ित वर्ग की पीड़ा को महसूस करते हुए भी समाज के जटिल ताने-बाने को समझते हैं। वे न तो किसी वर्ग को पूरी तरह खलनायक बनाते हैं और न ही किसी को आदर्श। वे यथार्थ को उसकी पूरी जटिलता के साथ प्रस्तुत करते हैं। यही वजह है कि उनके कथा-साहित्य में जातिगत विषमता और वर्गीय विखंडन केवल समस्या के रूप में नहीं, बल्कि मनुष्य के अस्तित्व और गरिमा के प्रश्न के रूप में उभरते हैं।

3. बदलता सामाजिक परिदृश्य: परंपरा से आधुनिकता की ओर संक्रमण-उत्तर-स्वतंत्रता काल के बाद भारतीय गाँवों में जो परिवर्तन आए, वे अत्यंत द्रुतगति से और बहुधा विदारक रूप

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 92-95

में आए। पारंपरिक ग्रामीण समाज जो सदियों से अपनी रूढ़ियों, आंतरिक लय और सामूहिक भावना के साथ जी रहा था, अचानक बाजारवाद, दलीय राजनीति, शहरीकरण, शिक्षा के प्रसार और नई आर्थिक शक्तियों के कारण तेजी से बदलने लगा। यह बदलाव केवल बाहरी नहीं था; उसने गाँव की सामाजिक संरचना, मानवीय संबंधों, मूल्यों और व्यक्ति की अंतःचेतना को भी गहराई से प्रभावित किया। विवेकी राय ने इस संक्रमण को बड़े ही तार्किक, यथार्थवादी और संवेदनात्मक ढंग से अपने कथा-साहित्य में पकड़ा है। उनके उपन्यासों और कहानियों में परंपरा और आधुनिकता का यह द्वंद्व बहुत जीवंत और मार्मिक रूप में उभरता है।

क) राजनीतिक चेतना का नकारात्मक प्रभाव और पंचायतें-स्वतंत्रता के बाद गाँवों में लोकतंत्र और चुनावों के आगमन ने पारंपरिक सामाजिक एकता को गहरी चोट पहुँचाई। जो पंचायतें कभी न्याय, भाईचारे और सामूहिक निर्णय का केंद्र हुआ करती थीं, वे अब जातिगत ध्रुवीकरण, चुनावी रंजिश, व्यक्तिगत स्वार्थ और भ्रष्टाचार का अड्डा बनने लगीं। 'मंगल भवन' और अन्य कथा-कृतियों में ग्रामीण राजनीति के इस कुरूप चेहरे का अत्यंत सजीव और यथार्थवादी चित्रण मिलता है।

लेखक ने दिखाया है कि राजनेता किस तरह गाँवों की भोली-भाली जनता को जातियों, दलों और गुटों में बाँटकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। चुनाव के समय पुराने रिश्ते खट्टे हो जाते हैं, भाईचारा टूट जाता है और गाँव में स्थायी विभाजन पैदा हो जाता है। जो लोग कभी संकट में एक-दूसरे के काम आते थे, वे अब राजनीतिक स्वार्थ के कारण एक-दूसरे के विरोधी बन जाते हैं। विवेकी राय ने इस प्रक्रिया को केवल आलोचनात्मक दृष्टि से नहीं देखा, बल्कि उसकी मानवीय कीमत को भी रेखांकित किया है। राजनीतिक चेतना का विकास सकारात्मक होना चाहिए था, लेकिन व्यावहारिक स्तर पर वह गाँव की पारंपरिक एकता और नैतिकता को कमजोर कर रहा है। उनके कथा-पात्र इस बदलाव को महसूस करते हैं और कई बार उसके बीच फँसे हुए दिखाई देते हैं।

ख) पलायन, शहरीकरण और संयुक्त परिवार का टूटना-बदलते सामाजिक परिदृश्य का सबसे गंभीर और दूरगामी परिणाम गाँवों से युवाओं के पलायन और संयुक्त परिवार व्यवस्था के विघटन के रूप में सामने आया है। पेट की आग बुझाने, बेहतर जीवन और नई संभावनाओं की तलाश में गाँव का आदमी महानगरों की ओर पलायन करने को विवश है। इस पलायन ने न केवल गाँवों की कृषि अर्थव्यवस्था को कमजोर किया है, बल्कि पारिवारिक संरचना, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक निरंतरता को भी तहस-नहस कर दिया है।

महानगरों की चकाचौंध और गाँवों की उपेक्षा के बीच पिसता हुआ ग्रामीण मानस विवेकी राय के कथा-साहित्य की केंद्रीय वेदना है। 'सोमाय की वापसी' जैसी कृतियों में यह पीड़ा बहुत मार्मिक रूप में आई है। जो व्यक्ति शहर जाकर लौटता है, वह न तो पूरी तरह शहर का रह जाता है और न गाँव का। वह दोनों जगहों से कटा -कटा महसूस करता है। संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, बुजुर्ग अकेले पड़ रहे हैं, युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से कट रही है और पारंपरिक मूल्य धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं। लेखक ने दिखाया है कि पलायन केवल आर्थिक मजबूरी नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और भावनात्मक विस्थापन भी है। गाँव खाली होते जा रहे हैं, खेत बंजर पड़ रहे हैं और सामाजिक ताना-बाना कमजोर पड़ रहा है। विवेकी राय इस परिवर्तन को केवल निराशा के साथ नहीं देखते; वे इसकी जटिलता को समझते हैं और मनुष्य की उस विवशता को रेखांकित करते हैं जो उसे अपनी मिट्टी छोड़ने को मजबूर करती है। यही संतुलित और संवेदनशील दृष्टि उनके साहित्य को विशेष बनाती है।

4. अर्थतंत्र का दबाव और नैतिक मूल्यों का पतन-किसी भी समाज का सामाजिक परिदृश्य उसके अर्थतंत्र द्वारा संचालित होता है। विवेकी राय ने इस सत्य को गहराई से पहचाना था। स्वतंत्रता के बाद के दशकों में गाँवों में जिस नई महाजनी संस्कृति, ठेकेदारी प्रथा, ब्लैक-मनी और बाजारवादी शक्तियों के प्रभाव ने प्रवेश किया, उसने ग्रामीण नैतिकता के सारे पारंपरिक मानदंडों को तेजी से बदल दिया। आर्थिक दबाव ने न केवल जीवन-यापन के तरीके बदले, बल्कि मनुष्य के व्यवहार, संबंधों और मूल्यों को भी गहरी चोट पहुँचाई। लेखक ने इस परिवर्तन को केवल बाहरी संकट के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसके नैतिक और मानवीय आयामों को भी बड़ी संवेदनशीलता से उकेरा है।

क) नैतिक अवमूल्यन और स्वार्थपरता-पहले जहाँ गाँव के लोग संकट के समय एक-दूसरे के लिए अपनी जान देने को तैयार रहते थे, जहाँ सामूहिकता और परस्पर सहयोग जीवन का आधार था, वहीं अब भौतिकवादी दौड़ और धन की लिप्सा ने ग्रामीण समाज में वैयक्तिक स्वार्थ को जन्म दे दिया है। भाई-भतीजावाद, बेईमानी, धोखेबाजी और अवसरवादिता को अब बुद्धिमत्ता और चतुराई का पर्याय माना जाने लगा है। पुराने मूल्य—ईमानदारी, सहायता, सामूहिक जिम्मेदारी—धीरे-धीरे कमजोर पड़ रहे हैं। विवेकी राय ने अपनी कथाओं में इस नैतिक पतन को अत्यंत क्षोभ और आत्मीय वेदना के साथ दर्ज किया है। वे दिखाते हैं कि कैसे आर्थिक दबाव व्यक्ति को अपनी जड़ों से काट देता है और उसे स्वार्थी बना देता है। जो व्यक्ति पहले दूसरों के दुख में साथ खड़ा होता था, अब वह अपनी सुविधा और लाभ को प्राथमिकता देने लगता है। यह परिवर्तन केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि पूरे सामाजिक ताने-बाने को प्रभावित कर रहा है। लेखक की दृष्टि में यह नैतिक अवमूल्यन गाँव की सबसे गहरी पीड़ा है, क्योंकि इससे मनुष्य अपनी मूल पहचान और मानवीय गरिमा दोनों खो रहा है।

ख) स्त्री-जीवन की बदलती स्थिति और संघर्ष-ग्रामीण समाज के इस बदलते परिदृश्य में सबसे अधिक मार महिलाओं और उपेक्षित वर्ग पर पड़ी है। हालाँकि आधुनिक शिक्षा, थोड़ी बहुत जागरूकता और बाहरी संपर्क के कारण स्त्रियों में चेतना का संचार अवश्य हुआ है, किंतु पितृसत्तात्मक व्यवस्था, आर्थिक लाचारी और सामाजिक दबावों ने उनके संघर्षों को और अधिक जटिल बना दिया है। वे घर की जिम्मेदारियों, पारिवारिक अपेक्षाओं और नई आर्थिक वास्तविकताओं के बीच फँसी हुई दिखाई देती हैं। विवेकी राय की कहानियों और उपन्यासों की स्त्रियाँ केवल लाचार या पीड़ित नहीं हैं। वे इस बदलते परिवेश में अपने अस्तित्व, सम्मान और पहचान की लड़ाई लड़ती हुई दिखाई देती हैं। कुछ स्त्रियाँ चुपचाप सहन करती हैं, तो कुछ अपने तरीके से प्रतिरोध करती हैं। लेखक ने उनकी पीड़ा को संवेदनशीलता से उकेरा है, साथ ही उनकी संघर्षशीलता, धैर्य और आंतरिक शक्ति को भी रेखांकित किया है। स्त्री-जीवन का यह चित्रण उनके साहित्य को और अधिक मानवीय और प्रासंगिक बनाता है। आर्थिक दबाव और सामाजिक परिवर्तन की दोहरी मार झेलती हुई ये स्त्रियाँ गाँव के बदलते यथार्थ का महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती हैं।

5. निष्कर्ष- निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि विवेकी राय

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh
A Peer Reviewed Refereed Multidisciplinary Quarterly International E-Journal
ISSN-2993-4648 Year/Volume: 04, Issue: 14 | April - June 2026 | Impact Factor: 4.5 Page – 92-95

का कथा-साहित्य भारतीय ग्राम्य जीवन के यथार्थ और उसके बदलते सामाजिक परिदृश्य का अत्यंत प्रामाणिक, सजीव और बहुआयामी दस्तावेज है। उन्होंने गाँवों को केवल प्रेमचंदकालीन आदर्शवादी चश्मे से नहीं देखा, और न ही केवल शहरी लेखकों की तरह उपहास या रोमांटिककरण की वस्तु माना। उन्होंने गाँवों के भीतर चल रहे संघर्ष, संक्रमण, पीड़ा और संभावनाओं को अपनी संपूर्णता में महसूस किया और बड़ी ईमानदारी से प्रस्तुत किया।

उनके कथा-साहित्य में चित्रित ग्राम्य जीवन जहाँ एक ओर अपनी माटी की सुगंध, श्रम की गरिमा और मानवीय मूल्यों के अवशेष को सहेजे हुए है, वहीं दूसरी ओर वह आधुनिकता, बाजारवाद, राजनीतिक स्वार्थों और आर्थिक दबावों के कुचक्र में पिसकर अपनी मूल पहचान खोने को भी अभिशप्त है। परंपरा और परिवर्तन, सामूहिकता और वैयक्तिकता, श्रम और शोषण—इन द्वंद्वों के बीच उनका साहित्य जीवंत और प्रासंगिक बना रहता है।

विवेकी राय का यह साहित्य आज के वैश्वीकृत और तेजी से शहरीकृत होते युग में भी उतना ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें हमारे गाँवों की वास्तविक स्थिति से परिचित कराता है। यह सोचने पर विवश करता है कि विकास की इस अंधी दौड़ में हम अपनी जड़ों से कितनी दूर आ चुके हैं और उन जड़ों से जुड़े रहना कितना आवश्यक है। उनकी रचनाएँ न केवल साहित्यिक उपलब्धि हैं, बल्कि सामाजिक दस्तावेज भी हैं जो आने वाली पीढ़ियों को ग्रामीण भारत की जटिलताओं, उसकी पीड़ा और उसकी संभावनाओं को समझने में सहायता करेंगी। विवेकी राय ने साबित किया कि सच्चा साहित्य वही है जो समाज की धड़कन को पकड़ता है और उसे ईमानदारी से प्रस्तुत करता है।

******

6. संदर्भ-सूची-

1.राय, विवेकी. बबूल. वाराणसी: भारतीय ज्ञानपीठ, 1978.
2.राय, विवेकी. सोमारु की वापसी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2005.
3.राय, विवेकी. पुरुष पुराण. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 1990.
4.राय, विवेकी. मंगल भवन. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1982.
5.राय, विवेकी. लोकरिन . नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 1995.
6.सिंह, डॉ. मैनेजर. हिंदी उपन्यास और आंचलिकता. पटना: बिहार ग्रंथ अकादमी, 1992.
7.अग्रवाल, डॉ. ओमप्रकाश. विवेकी राय का कथा-साहित्य: लोक-संस्कृति और यथार्थ. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2008.
8.डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास. वाराणसी: लोकभारती प्रकाशन, 2010.
9.पाठक, विश्वनाथ. आंचलिक कथा-साहित्य और विवेकी राय. लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, 2015.